पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित 01.12.2022 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई. एफ. एस.कोड - SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868051444 पर एस.एम.एस कर दें या 9958889970 पर Paytm कर दें। – अनिल आर्य

वर्ष-39 अंक-13 मार्गशीर्ष-2079 दयानन्दाब्द 199 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2022 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.12.2022, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

वैदिक विद्वान आचार्य महेन्द्र भाई का अभिनंदन सम्पन्न

विद्वत्ता के साथ सरलता सेवा की प्रतिमूर्ति है भाई जी –आनन्द चौहान (निदेशक, एमेटी शिक्षण संस्थान)

रविवार 20 नवम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री व वैदिक विद्वान आचार्य महेन्द्र भाई की एक वर्ष आस्ट्रेलिया प्रवास के उपलक्ष्य में आर्य समाज विवेक विहार पूर्वी दिल्ली में भव्य अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता यशोवीर आर्य ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र ने यज्ञ के साथ किया। मुख्य अतिथि एमिटी शिक्षण संस्थान के निदेशक आनंद चौहान ने कहा कि महेन्द्र भाई विद्वता के साथ साथ सेवा सरलता की प्रतिमूर्ति है यज्ञ के प्रति आपकी अपार श्रद्धा है आपका जीवन प्रेरणा स्रोत है। आर्य सन्यासी स्वामी आर्य वेश ने कहा कि अब भाई जी आस्ट्रेलिया पहुंच कर आर्य समाज का प्रचार प्रसार करेगे और युवा शक्ति को भारतीय संस्कृति के रंग से रंगगे। केंद्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि युवा पीढ़ी का निर्माण सबसे बड़ी चुनौती है जिसे भाई जी अपने पुरुषार्थ से पूरा करेगे। प्रवीण आर्य पिंकी, शिशुपाल आर्य, प्रवीण आर्य गाजियाबाद, कुसुम भंडारी, नरेश प्रसाद आर्य के मधुर भजन हुए। आर्य नेता पीयूष शर्मा, उषा किरण कथूरिया,राजकुमारी शर्मा, जस्टिस वी के मिश्रा, डॉ. सुनील रहेजा, डॉ. डी के गर्ग, स्वामी आदित्य वेश, सोनिया संजू, राधा भारद्वाज, सूर्यदेव शास्त्री, ब्रह्मदेव वेदालंकार, प्रमोद चौधरी, बिजेंद्र सिंह आर्य, वीरेश् भाटी, धर्म वीर प्रधान, डॉ. नरेंद्र वेदालंकार, धर्मपाल आर्य, देवेन्द्र भगत, अरुण आर्य, माधव सिंह, डॉ.आर के आर्य (स्वदेशी फार्मेसी), कृष्ण कुमार यादव, सुरेश आर्य, दुर्गेश आर्य,रामकुमार आर्य, वेद प्रकाश आर्य आदि ने अपनी शुभकामनाये प्रदान की।

'स्वातन्त्रय वीर सावरकर' पर गोष्ठी सम्पन्न

क्रांतिकारियों के प्रेरणा श्रोत रहे वीर सावरकर– आचार्य वीरेन्द्र विक्रम

भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करना ही वीर सावरकर को श्रद्धांजलि –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

सोमवार 28 नवम्बर 2022,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'स्वातंत्रय वीर सावरकर' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह करोना काल में 473 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान् आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ने कहा कि वीर सावरकर अनेक क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्त्रोत रहे,उन्हें महर्षि दयानंद सरस्वती व श्याम जी कृष्ण वर्मा से प्रेरणा मिली तथा उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को आगे बढ़ाया। वह भारतीय इतिहास के स्वर्ण अक्षर हैं जिन्हें दो बार आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।कुछ लोग उनकी निहित स्वार्थ वश आलोचना करते हैं उन्हें उनका त्याग तपस्या, समर्पण व बलिदान दिखाई नहीं देता जो देश के लिए न्योछावर हो गए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वीर सावरकर ने हिन्दुत्व की अवधारणा को नए सिरे से परिभाषित किया उनका मानना था कि हिंदुओं का सैनिकिकरण समय की आवश्यकता है तथा जब तक भारत हिन्दू राष्ट्र घोषित नहीं होता समस्याओं का हल नहीं हो सकता।उनका राष्ट्र के लिए अप्रतिम बलिदान स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है।वीर सावरकर से आज के युवाओं को प्रेरणा लेकर राष्ट्र के प्रति समर्पित होना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेता हरीश भारद्वाज व अध्यक्ष आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़) ने वीर सावरकर के बलिदान को नमन करते हुए कहा कि आज कुछ राजनेता वीर सावरकर की आलोचना कर रहे हैं वह अत्यन्त दुर्भाग्य है उन्हें राष्ट्र से माफी मांगनी चाहिए। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि वीर सावरकर का जीवन चरित्र पाठ्य पुस्तकों में पढ़ाना चाहिए ऐसा महान देश भक्त योद्धा का मिलना विश्व इतिहास में मिलना मुश्किल है। गायिका कौशल्या अरोड़ा,93 वर्षीय माता सुमित्रा गुप्ता,प्रतिभा कटारिया, जनक अरोड़ा,कमलेश चांदना,प्रवीणा ठक्कर, कमला हंस आदि के मधुर भजन हुए।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का आर्यसमाज के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान

महाभारत युद्ध के बाद विद्वानों की भारी क्षति तथा राजकीय अव्यवस्था के कारण धर्म एवं संस्कृति की उन्नति रुक गई और इनका पतन आरम्भ हुआ जो समय के साथ वृद्धि को प्राप्त होता गया। इसी का परिणाम ईसा की आठवीं शताब्दी से देश में परतन्त्रता का होना आरम्भ हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में देश अंग्रेजों का पराधीन था। इस समय सत्य सनातन वैदिक धर्म का सत्यस्वरूप विलुप्त हो चुका था और इसका स्थान अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों तथा वेद विरुद्ध मान्यताओं ने ले लिया था। ऐसे समय में 12 फरवरी, 1825 ई. को गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर ऋषि दयानन्द ने जन्म लेकर जनजागरण करते हुए वैदिक धर्म व संस्कृति का शुद्धस्वरूप प्रस्तुत किया और उसका प्राणपण से प्रचार किया। ईश्वर ने महर्षि दयानन्द को विद्या तथा अविद्या वा सत्य व असत्य का विवेक करने वाली विमल बुद्धि दी थी। समाज सुधार, अज्ञान तथा अन्धविश्वास दूर करने सहित वेदों का प्रचार करने की प्रेरणा उन्हें अपने विद्यागुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती से मिली थी। ऋषि दयानन्द ने चुनौती देते हुए घोषणा की थी कि वेद ही वस्तुतः संसार की समस्त मानव जाति का एकमात्र धर्मग्रन्थ है। वेदानुकुल मान्यतायें व सिद्धान्त ही ईश्वर प्रदत्त होने से उन्हें स्वीकार थे और वेद विरुद्ध सभी मान्यताओं व सिद्धान्तों का वह प्रमाणों, युक्तियों व तर्कों से खण्डन करते थे। उनके समय में संसार का कोई वेदेतर विद्वान उनकी किसी मान्यता का युक्ति व प्रमाण के साथ खण्डन नहीं कर सका। स्वामी दयानन्द के वेद प्रचार के कार्य के कारण ही 30 अक्तूबर, 1883 ई. को उनके विरोधियों द्वारा विषपान कराये जाने से उनकी मृत्यु हुई। उसके बाद स्वामी दयानन्द जी के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके कार्यों को योग्यतापूर्वक किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वामी दयानन्द की वेदों की शिक्षाओं और सिद्धान्तों पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा का उद्धार किया। उन्होंने सन् 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी जहां वेदों के अनेकानेक विद्वान बनें जिन्होंने शिक्षा, अध्यापन, पत्रकारिता, स्वतन्त्रता आन्दोलन, इतिहास, धर्म प्रचार, शुद्धि, जन्मनाजाति–विरोध में प्रचार व दलितोत्थान आदि कार्यों सहित अनेकानेक समाज सुधार के कार्य किये और वैदिक धर्म का प्रचार कर भारत का गौरवमय इतिहास रचा। स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह वैदिक धर्म व संस्कृति के अनुरागी महापुरुष थे। आदर्श ईश्वर भक्त, वेदभक्त, देशभक्त, मानवता के पुजारी, शिक्षा शास्त्री, समाज सुधारक और वेद धर्म प्रचार सहित स्वामी श्रद्धानन्द स्वतन्त्रता आन्दोलन के शीर्ष नेता और दलितों के मसीहा थे। विधर्मियों की शुद्धि का उन्होंने अपूर्व ऐतिहासिक कार्य किया है। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी व अन्य गुरुकुल आज भी वैदिक धर्म व संस्कृति के उत्थान में अपनी विशेष भूमिका निभा रहे हैं। स्वामी जी ने देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रालेट एक्ट के विरोध में सन् 1919 में उन्होंने दिल्ली में अंग्रेज सरकार के विरोध में आन्दोलन के नेतृत्व की बागडोर अपने हाथों में ली थी और उसे सफल किया था। जिस आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया था, उसके जलूस के चांदनी चौक आने पर अंग्रेजों के गुरखा सैनिकों ने स्वामी जी पर अपनी बन्दूकों की संगीने तान दी थी। तभी भीड़ को चीर कर स्वामी श्रद्धानन्द जी सैनिकों के सामने आये थे और सीना खोलकर सैनिकों को ललकारते हुए बोले थे, 'हिम्मत है तो मेरे सीने पर मारो गोली'। स्वामी जी की यह ललकार, उनकी वीरता, निर्भयता, निडरता व साहस को देखकर वहां तैनात अंग्रेज अधिकारी घबरा गया था और उसने सैनिकों को बन्दूकें नीची करने का आदेश दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की यदि अन्य घटनाओं को छोड़ भी दिया जाये तो यही घटना उन्हें महान् बनाने के लिए काफी है। इससे जुड़ी घटना यह भी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की वीरता की यह खबर पूरी दिल्ली और देश भर में फैल गई थी। इससे प्रभावित होकर दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से उन्हें मुस्लिमों की एक सभा को सम्बोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। स्वामी जी ने वहां पहुंच कर भी एक नये इतिहास की रचना की जो वैदिक धर्म के इतिहास की घटनाओं में अन्यतम घटना है। उन्होंने जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मन्त्र 'ओ३म् त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथः। अघा ते सुम्नी महे।।' बोल कर अपना सम्बोधन आरम्भ किया था और भारी मुस्लिम जनसमूह में उनकी जय जयकार हुई थी। उसके बाद जामा मस्जिद के मिम्बर से सम्बोधन देने का सम्मान किसी गैर मुस्लिम व्यक्ति को नहीं मिला। प्रत्यक्ष दर्शियों व समकालिन लोगों ने लिखा हैं कि चांदनी चौक की घटना से स्वामी श्रद्धानन्द जी दिल्ली के बेताज बादशाह बन गये थे। बताते हैं कि स्वामी जी ने जामा मस्जिद से अपने सम्बोधन में कहा था कि हिन्दी का हम शब्द 'ह' से हिन्दू व 'म' से मुसलमान को दर्शाता है और यह शब्द दोनों समुदायों की एकता का प्रतीक है।

देश की स्वतन्त्रता के इतिहास में अमृतसर में 13 अप्रैल, सन 1919 की बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग की नरसंहार की घटना प्रसिद्ध है जिसमें शान्तिपूर्ण सभा कर रहे हजारों स्त्री व पुरुषों को बिना चेतावनी दिए गोलियों से भून दिया गया था। गोली चलाने का आदेश ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर ने दिया था। इस गोलीकाण्ड में लगभग 1500 लोग मरे थे और 1200 से अधिक घायल हुए थे। इसके विरोध में चेन्नई में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया था। जलियावाला–बाग काण्ड के विरोध में अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन आयोजित करने के लिए कोई उपयुक्त नेता न मिलने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी को अमृतसर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया था। इसकी एक विशेषता यह थी कि यहां स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना स्वागत भाषण हिन्दी में दिया था। इस घटना से स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता की कोटि के नेता बन गये थे। डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार द्वारा सम्पादित 'स्वामी श्रद्धानन्द – एक विलक्षण व्यक्तित्व' ग्रन्थ में इस घटना का विस्तार से वर्णन किया गया है। पाठकों को इस ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिये। इससे स्वामी श्रद्धानन्द जी के महान व्यक्तित्व को भली प्रकार से जाना जा सकता है। आगरा व मथुरा के आसपास रहने वाले मलकाने राजपूत जिनके सभी रीति–रिवाज व पूजा–पद्धतियां आदि हिन्दू व हिन्दुओं के समान थीं, मुसलमान कहलाते थे। वह मुस्लिम मलकाने राजपूत चाहते थे उनको उनके पूर्वजों के हिन्दू धर्म में शामिल कर लिया जाये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उनका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था और भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर लगभग 2 लाख की संख्या में मलकाने राजपूतों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया था। उनका यह कार्य इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। यह शुद्धि वस्तुतः वेद प्रचार आन्दोलन है जिसका एक उद्देश्य भय व प्रलोभन आदि अनेक कारणों से अतीत में धर्मान्तरित अपने बिछुड़े भाईयों को ईश्वरीय ज्ञान वेद की शरण में लाना था। आर्य जाति इस कार्य के महत्व को जानकर इसका अनुसरण करेगी तो इतिहास में जीवित रहेगी। हम यहां यह भी बता दें कि आर्यसमाज का वेद प्रचार और शुद्धि का आन्दोलन सत्य को ग्रहण करने और असत्य के त्याग करने के सिद्धान्त पर आधारित है। आर्यसमाज सभी मतावलम्बियों की धर्म विषयक जिज्ञासाओं का सन्तोषजनक समाधान करता है जबकि अन्य ऐसा नहीं करते। मनुष्य जाति की उन्नति का एकमात्र कारण सत्य का प्रचार ही है। आर्यसमाज को ईश्वर प्रदत्त सत्य ज्ञान के भण्डार वेदों का संगठित होकर पुरजोर प्रचार करना चाहिये। यह ध्यान रखना चाहिये कि वेदाज्ञाओं का पालन ही धर्म है। वेद के शब्द 'कृण्वन्तो विश्मार्यम' में विश्व के लोगों को श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव एवं आचरण वाला बनाने की आज्ञा दी गई है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दलितोत्थान का कार्य भी प्रभावशाली रूप से किया। कांग्रेस में रहते हुए उन्होंने अनुभव किया कि उनके इस कार्य में कांग्रेस द्वारा वह प्राथमिकता व सहयोग नहीं मिल रहा है जिसकी अपेक्षा व आवश्यकता थी। इस कारण उन्होंने अपना रास्ता बदलते हुए कांग्रेस छोड़ दी। इतिहास में यह भी पढ़ने को मिलता है कि पंजाब में किसी स्थान पर सवर्ण हिन्दू अपने कुओं से दलितों को पानी नहीं भरने देते थे। ऐसे स्थानों पर स्वामी श्रद्धानन्द और उनके आर्यसमाजी सहयोगी स्वयं पानी भरकर दलित भाईयों के घर पहुंचाते थे। हम अनुभव करते हैं कि आर्यसमाज व इसके नेताओं ने समाज के उपेक्षित वर्ग को दलित नाम दिया और उनके उत्थान के लिए दलितोत्थान का आन्दोलन चलाया। आर्यसमाज के प्रचार एवं कार्यों से जन्मना जातिवाद के प्रयोग में कमी आई और दलित बन्धुओं ने भी उन्नति की। हमारे सामने ऐसे उदाहरण हैं कि कुछ दलित परिवारों के बन्धु गुरुकुलों में पढ़कर वेदों के विद्वान बने, वेदों पर टीकायें आदि लिखी, मांस–मदिरा का सेवन त्यागा, स्वास्थ्यप्रद घी–दुग्ध आदि का भोजन किया, आर्यसमाज में हिन्दुओं के घरों में पूजा पाठ कराने वाले सम्मानित पुरोहित बनें और समाज में सम्मानित स्थान पाया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सद्धर्म प्रचारक पत्र का सम्पादन व प्रकाशन भी किया था। यह पंजाब में बहुत लोकप्रिय पत्र था। पहले यह उर्दू में प्रकाशित किया जाता था। ऋषि दयानन्द के हिन्दी को महत्व दिये जाने के कारण आपने, पंजाब में उर्दू पाठको की बहुसंख्या होने पर भी, अपने पत्र को उर्दू के स्थान पर हिन्दी में प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया था। इससे उन्हें भारी आर्थिक घाटा भी हुआ था परन्तु धर्म को महत्व देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्थिक घाटे की चिन्ता नहीं की। स्वामी जी आर्यसमाज, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे। ऋषि दयानन्द जी का खोजपूर्ण जीवन चरित लिखाने का श्रेय भी आपको है। ऋषि जीवन के अनुसंधानकर्ता और सम्पादक रक्तसाक्षी पं. लेखराम जी आपके गहरे मित्र व सहयोगी थे। दोनों में गहरे आत्मीय सम्बन्ध थे। आपने पं. लेखराम जी की एक मुस्लिम आततायी द्वारा हत्या के बाद उनका जीवन चरित्र भी लिखा है। पंडित लेखराम जी का जीवनचरित्र वैदिक धर्म पर 23 दिसम्बर 1926 को शहीद हुए स्वामी श्रद्धानन्द का अपने से पहले धर्म की वेदी पर शहीद हुए पं. लेखराम जी को श्रद्धांजलि है। इसे देश की युवा पीढ़ी को अवश्य पढ़ना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक बहुत अच्छे लेखक भी थे। आप अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी आदि भाषाओं के विद्वान थे। आपने हिन्दी व उर्दू में अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। आपका समस्त साहित्य, कुछ उर्दू आदि ग्रन्थों को छोड़कर, 11 खण्डों में वैदिक साहित्य के प्रकाशक 'मै. विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली' से प्रकाशित हुआ है। इसका नया संस्करण इसी प्रकाशक द्वारा दो खण्डों में भव्य रूप में पुनः प्रकाशित किया गया है। स्वामी जी ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' लिखी है जो किसी उपन्यास की तरह ही रोचक होने के साथ उनके जीवन की सभी प्रकार की घटनाओं से युक्त है। इसमें आपने अपने जीवन की किसी भी गुप्त बात को छिपाया नहीं है। आत्मकथा साहित्य में यह बेजोड़ ग्रन्थ है। वेद भाष्यकार डा. आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी के सुपुत्र डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर 'एक विलक्षण व्यक्तित्वरू स्वामी श्रद्धानन्द' नाम से एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ की महत्ता का अनुमान इसे पढ़कर ही लगाया जा सकता है। हर साहित्य प्रेमी को इस ग्रन्थ को पढ़ता चाहिये।

जिन दिनों स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल कांगड़ी का संचालन करते थे तो वहां श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी भी आये थे। गांधी जी यहां आने से कुछ समय पूर्व ही दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आपको मिस्टर गांधी न कहकर महात्मा गांधी के नाम से सम्बोधित किया था। गांधी जी के नाम के साथ 'महात्मा' शब्द का प्रथम प्रयोग स्वामी जी ने ही किया जो गांधी जी की मृत्यु तक उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यह बता दें कि जब गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में आन्दोलन किया था तो स्वामी श्रद्धानन्द जी के कागड़ी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भारत में मेहनत व मजदूरी करने सहित अपने भोजन आदि व्यय में कमी करके एक अच्छी बड़ी धनराशि गांधी जी को आन्दोलन में सहायतार्थ अफ्रीका भेजी थी। एक बार इंग्लैण्ड की संसद में विपक्ष के नेता रैम्जे मैकडानल, जो बाद में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री बने, गुरुकुल आये और यहां स्वामी जी के निकट रहे। आपने गुरुकुल विषयक अपने संस्मरणों में स्वामी श्रद्धानन्द जी को जीवित ईसा मसीह के रूप में स्मरण किया था। उन्होंने यह भी लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति सेंट पीटर की मूर्ति बनाना चाहे तो मैं उसे स्वामी श्रद्धानन्द की भव्य मूर्ति को देखने की संस्तुति करूगां। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की अनेक प्रेरणाप्रद घटनायें हैं जिसके लिए उनका जीवन चरित व श्रद्धानन्द ग्रन्थावली पढ़ना उपयुक्त है। अधिक विस्तार न कर हम लेख को विराम देते हुए उस आदर्श महापुरुष, ईश्वर, वेद व देश भक्त, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के उद्धारक, समाज सुधारक, दलितोद्धारक, शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी को उनके बलिदान दिवस पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

शोक समाचार

1. आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी(पलवल) का निधन।
2. श्री रामफल बंसल एडवोकेट (पूर्व अध्यक्ष,सार्वदेशिक सभा न्याय सभा) का निधन।
3. श्री विद्यासागर चड्ढा (पिता श्री सतीश चड्ढा, महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य) का निधन।
4. श्री धर्मेश आर्य(विचार टी वी) का निधन।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की और से विनम्र श्रद्धांजलि

–अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 474वां वेबिनार सम्पन्न

'आध्यात्मिक शक्ति की प्रचंड धारा और योग' पर गोष्ठी सम्पन्न

मंगलवार 22 नवम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'आध्यात्मिक शक्ति की प्रचंड धारा और योग' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह करोना काल से 471 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता अनिता रेलन (आर्थिक सलाहकार,केनरा बैंक नई दिल्ली) ने कहा कि मनुष्य एक प्राणी है वह प्राणी जिसमें प्राणशक्ति जो जीवन शक्ति का दूसरा नाम है।हमारे संपूर्ण शरीर में तथा चारों और ऊर्जा का क्षेत्र है यह ऊर्जा शरीर के अंदर तथा उसके चारों और निश्चित मार्गों पर घूमती हैं इन्हीं मार्गों को योग की भाषा में नाड़ियां कहते हैं और जब कभी नाड़ियों में अवरोध उत्पन्न हो जाता है तो प्राणों में भी अवरोध उत्पन्न हो जाता है। यही नहीं उन्होंने ने बताया कि मानव शरीर में मौजूद सप्त चक्र मूलाधार,स्वाधिष्ठान,मणिपुर, अनाहत, विशुद्धि,आज्ञा,सहस्रार यही सप्त चक्र उर्जा की कुंडली कहलाते हैं।वास्तव में हमारे शरीर में लगभग 72 हजार नाड़ियां होती हैं और शिव संहिता के अनुसार 350000 जिस प्रकार पीपल के पत्ते पर धारियां दिखाई देती हैं उसी तरह शरीर में भी नाड़ियां फैली हुई हैं उनका शरीर और मन से गहरा संबंध है हमें इनमें संतुलन बनाकर चलना होता है,पर हमारे शरीर की अवस्था बिगड़ जाती हैं शरीर की प्राण ऊर्जा का बहाव लघु नाड़ियों से मुख्य एवं मुख्य से प्रधान नाड़ियों की ओर बना रहता है उसी तरह जिस तरह बरसात का पानी झरने से नालों की ओर नालों से मुख्य नदियों की ओर होता है।प्राणी का मेरुदंड उसके शरीर में ऊर्जा का पावर हाउस होता है मेरुदंड के आधार में मूलाधार चक्र जो शारीरिक शक्ति मानसिक ज्ञान और आध्यात्मिक आनंद का केंद्र बिंदु है मूलाधार चक्र शरीर में वह हवाई अड्डा है जहां से साधक चेतना के उच्च स्तरों की और उड़ान भर सकता है इड़ा और पिंगला का अपना एक विशेष महत्व है।इनका असंतुलन जीवन में ज्ञान और आनंद की प्राप्ति में बाधक है।इन दोनों के मध्य संतुलन सुषुम्ना की सजगता है।जब साधक की शक्तियां एवं ऊर्जा समन्वित होने लगती हैं तब आध्यात्मिक शक्ति की प्रचंड धारा प्रभावित होने लगती हैं।गहरे लंबे स्वांस,स्वास्थ्य प्राप्त होने वाले प्राणी की यात्रा जो प्राणायाम के एक–एक अमाया में सिमटी है उसे अपनाना होगा।गंगा यमुना सरस्वती के संगम की तरह उससे स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीर की वरिष्ठता और बुद्धिमत्ता और सद्भाव संपन्न के त्रिविध लाभ उपलब्ध होंगे,यहीं से शुरू होगी हमारी आध्यात्मिक यात्रा। राष्ट्रीय महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि मनुष्य के मुख्य कर्तव्य पंच महायज्ञ हैं "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"अर्थात् प्रत्येक श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहलाता है अथवा यज्ञ करना सबसे श्रेष्ठ कर्म है।स्वामी दयानन्द जी ने वेदों के आधार पर कहा कि प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन अपने जीवन में पाँच महायज्ञ जरूर करने चाहिए।हमारे शास्त्र भी हमें प्रतिदिन पञ्च महायज्ञ करने का निर्देश देते हैं।वे हैं– ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ,अतिथियज्ञ और बलिवैश्व देव। प्रत्येक गृहस्थ के लिए इन पाँचों महायज्ञों का अनुपालन करना आवश्यक माना जाता है।इस प्रकार नियमपूर्वक इन यज्ञों को करने से हम अपने दायित्वों की पूर्ति कर सकते हैं जिससे हमें आत्मिक सुख मिलता है तथा इह लोक और परलोक दोनों में हम स्वर्ग–सुख का भोग कर पाते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने 346 वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा की श्री गुरु तेगबहादुर जी हिन्दू धर्म के रक्षक थे,उन्होंने अपना शीश कटवा दिया पर इस्लाम स्वीकार नहीं किया।यह उनके बलिदान का अनुपम उदाहरण है,आज की नयी पीढ़ी को उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर हिन्दू धर्म की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आर्य नेत्री रजनी चुघ ने कहा कि योग शरीर,मन,बुद्धि को स्वस्थ करते हुए आत्मस्वरूप तक पहुंचाने का मार्ग है।

'हृदयाघात कारण व बचाव' पर गोष्ठी सम्पन्न

सोमवार 21 नवम्बर 2022,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'हृदयाघात कारण व बचाव' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 470 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता डॉ.सुनील रहेजा (सी.एम.ओ.,जी.बी. पंत अस्पताल) ने कहा कि स्वस्थ जीवन शैली अपनाने से हृदयाघात से बचाव सम्भव है।अनियमित खान–पान,रहन सहन व व्यायाम से हृदयाघात का खतरा बढ़ जाता है।प्रातरू 10 से शाम 5 बजे तक सैर का समय उपयुक्त रहता है क्योंकि धूप के कारण प्रदूषण कम होता है।आजकल सुबह व रात की सैर से बचना चाहिए।उन्होंने कहा कि सादा संतुलित भोजन,व्यायाम प्राणायाम प्राण शक्ति बढ़ाते हैं।डांस करना,संगीत सुनना,हास्य योग करना,तनाव मुक्त रहना,मैदा से बचना,हरि सब्जी का प्रयोग, रिफाइंड तेल तेल से बचाव और सरसों के तेल प्रयोग करने की आवश्यकता है तभी हम अच्छा स्वस्थ जीवन यापन कर सकते हैं। मुख्य अतिथि चौ. चौधरी मंगल सिंह जी ने बताया कि हमारा मिशन 125 वर्ष तक जीवित रहने का है हम सांस पानी और भोजन तीनों आयामों को समझ लें तो हम 125 वर्ष तक क्या आगे भी स्वस्थ जीवित रह सकते हैं,जहां तक बात सांस की करते हैं तो हम आलस के वशीभूत होकर छोटा सांस लेते हैं जबकि प्रकृति ने हमें बड़ा सांस लेने की मशीन प्रदान की है,बहुत अधिक समय तक केवल छोटा सांस लेने की वजह से हमारे लंग्स सिकुड़ जाते हैं जिसकी वजह से वह पूरा कार्य नहीं करते तथा हमारे शरीर में ऑक्सीजन की कमी हमेशा बनी रहती है यदि हम आधा घंटा डीप ब्रीथिंग कर लें तो हम 24 घंटे के लिए रिचार्ज हो सकते हैं जहां तक बात पानी की है पानी हमारे शरीर को 75: तक प्रभावित करता है,जो भी पानी हम पीते हैं ना तो उसे कभी चेक करते हैं और ना ही कितना पानी पीना है, विषय पर विचार करते हैं, जिसकी वजह से शरीर में हमेशा पानी की कमी बनी रहती है,तथा शरीर के अंदर जमा हुए टॉक्सिंस बाहर नहीं निकल पाते,जब से हमारे देश में आर ओ का चलन हुआ है तब से बीमारियां ओर बढ़ी हैं क्यों कि हमने आर ओ मशीन के द्वारा पानी का टी डी एस बहुत कम कर दिया है,जिसकी वजह से पीने का पानी एसिडिक हो जाता है जो कि हमारी पेन क्रिया,लीवर,किडनी,तथा शरीर के अन्य भागों को धीरे धीरे नुकसान पहुंचाता रहता है जिसके कारण से कुछ समय बाद हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती जाती है,जिससे हम धनवान होते हुए भी कंगाल की तरह जीवन व्यतीत करते रहते हैं जहां तक बात भोजन की है किसान जो भोजन पैदा करता है वह कीटनाशक का प्रयोग करता है जिसकी वजह से हमारे खाने की चीजों में भी जहर आ जाता है जिसे हम कह सकते हैं कि हम खाने के साथ–साथ धीमा जहर भी खा रहे हैं जिसकी वजह से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता दिन प्रतिदिन कम होती जाती है,यही कारण है हमें बुखार, खांसी जुकाम फीवर तथा कोरोना जैसी महामारी घेर लेती है,अतः स्वस्थ जीने के लिए हमें तीनों आयामों पर काम करना होगा, सांस,पानी व भोजन। आर्य नेता ओम सपरा (पूर्व मेट्रो पोलटन मैजिस्ट्रेट) ने अध्यक्षता की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने गोष्ठी का संचालन किया व प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया कहां करो योग रहो निरोग।

सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण

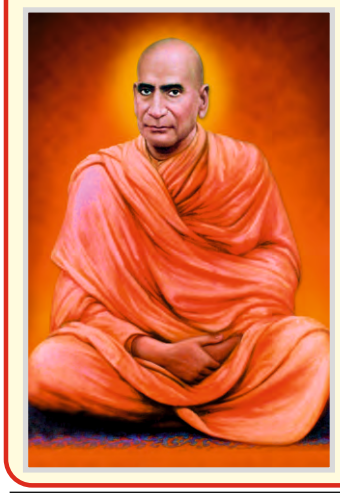

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस समारोह

शुक्रवार 23 दिसम्बर 2022, प्रातः 10 से 12 बजे तक

स्थानः 14, महादेव रोड, नई दिल्ली –110001 (निकट मेट्रो स्टेशन पटेल चौक)

मुख्य अतिथिः श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी (केन्द्रीय विदेश राज्य मंत्री भारत सरकार)

यज्ञ ब्रह्माः आचार्या विमलेश बंसल जी दर्शनाचार्य

मुख्य वक्ताः आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

आप सादर आमंत्रित है।

निवेदकः अनिल आर्य, संयोजक देवेन्द्र भगत, प्रवीन आर्य –राष्ट्रीय मंत्री धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष

469वीं आर्य गोष्ठी ऑनलाइन सम्पन्न

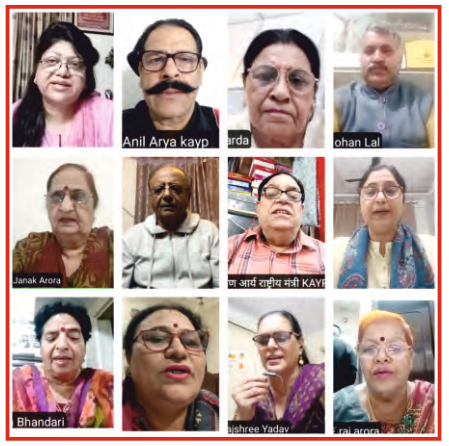

बुधवार 23 नवम्बर 2022,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'श्रद्धा' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल में 469 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि क्रूर भेड़िए को जल्दी से जल्दी फांसी हो और धर्मांतरण और लव जिहाद को रोकने के लिए देशव्यापी कठोर कानून बने। हिन्दू समाज सचेत रहकर अपनी बहिन बेटियों को संस्कारों की ओर प्रेरित करें जिससे कोई और जिहादी भेड़िया 35 टुकड़े करने का दुस्साहस न कर सके,जहां दंड कठोर,वहीं सुख शांति चहुं ओर। उन्होंने बहिन बेटियों से प्यार के नकली जाल से सावधान रहने की अपील की। मुख्य अतिथि शारदा कत्याल व अध्यक्ष आचार्य मोहन शास्त्री (कुरुक्षेत्र) ने कहा कि एक शास्त्रोक्त वचन है श्रद्धावान लभते ज्ञानम् अर्थात श्रद्धा से युक्त मनुष्य ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है,श्रद्धा वह रास्ता है जिस पर चलकर सत्य तक पहुंचा जा सकता है,यदि सत्य पर पहुंच जाएं तो उस पर टिके रहना अति महत्वपूर्ण है। न जाने कितनी परिस्थितियों को पार करना पड़ता है और अब ऐसी विपरीत परिस्थितियों को पार कैसे करें ये वातावरण की संवाहक ऋतुएं हमें सिखाती है,वेद वाक्य कहता है जिवेम् शरदः शतम् अर्थात सौ वर्ष तक जिएं।पर जिएं कैसें, तो इसमें कहा शरद पार करके। क्योंकि इस ऋतु में वातावरण संघर्ष से परिपूर्ण हो जाता है,जो इसको पार कर गया तो मानों उसका स्वागत बसंत करता है। तो बन्धुओं श्रद्धावान मनुष्य के जीवन में संघर्ष ज़रूर आते हैं,पर जो इनको विजय कर गया तो स्वयं परमात्मा उसका पालक व रक्षक बन जाता है और उसका जीवन आनंद से सराबोर हो जाता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि श्रद्धा की हत्या के समान इसी तरह की घटनाओं को रोकने हेतु केंद्र सरकार संपूर्ण देश में शीघ्र 'लव जिहाद विरोधी कानून' बनाए!भारत में लव जिहाद की घटनाएं प्रतिदिन बढ रही हैं।हाल ही में लिव इन में रहनेवाली मुंबई की श्रद्धा नामक युवती की जिहादी आफताब ने क्रूरता से हत्या कर उसके शव के 35 टुकडे किए।आफताब की अन्य भी हिन्दू प्रेमिकाए है,यह भी सामने आया है।इससे पहले भी हरियाणा और पश्चिम बंगाल में प्यार का प्रस्ताव ठुकराने पर हिन्दू लड़कियों पर आक्रमण करनेवाली घटनाएं सामने आयी हैं।लव जिहाद में कहीं हिन्दू युवतियों का धर्मांतरण किया जाता है,कहीं उन पर अत्याचार किए जाते है,तो कहीं हिन्दू युवतियों की हत्या भी की जा चुकी है।लव जिहाद आज हिन्दू समाज के लिए बडी समस्या बन चुका है तथा इसके विरोध में अब संगठित होना समय की आवश्यकता है। केंद्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रांतीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि संस्कार वान बेटियाँ ही राष्ट्र का सुरक्षित भविष्य है अतः अपनी बेटियों को संस्कार वान बनायें। भजनोपदेशक नरेन्द्र आर्य सुमन, राज कुमार भण्डारी,कमला हंस, जनक अरोड़ा,रजनी चुघ,रचना वर्मा,सुषमा बजाज,सरला बजाज, विजय लक्ष्मी, राजश्री आदि ने गीत सुनाकर भावविभोर कर दिया।

94वीं पुण्य तिथि पर लाला लाजपत राय को दी श्रद्धांजलि

बुधवार 23 नवम्बर 2022, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'श्रद्धा' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह करोना काल में 469 वां वेबिनार था। मुख्य वक्ता दर्शनाचार्या विमलेश बंसल ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि क्रूर भेड़िए को जल्दी से जल्दी फांसी हो और धर्मांतरण और लव जिहाद को रोकने के लिए देशव्यापी कठोर कानून बने। हिन्दू समाज सचेत रहकर अपनी बहिन बेटियों को संस्कारों की ओर प्रेरित करें जिससे कोई और जिहादी भेड़िया 35 टुकड़े करने का दुस्साहस न कर सके,जहां दंड कठोर, वहीं सुख शांति चहुं ओर। उन्होंने बहिन बेटियों से प्यार के नकली जाल से सावधान रहने की अपील की। मुख्य अतिथि शारदा कत्याल व अध्यक्ष आचार्य मोहन शास्त्री (कुरुक्षेत्र) ने कहा कि एक शास्त्रोक्त वचन है श्रद्धावान लभते ज्ञानम् अर्थात श्रद्धा से युक्त मनुष्य ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है,श्रद्धा वह रास्ता है जिस पर चलकर सत्य तक पहुंचा जा सकता है,यदि सत्य पर पहुंच जाएं तो उस पर टिके रहना अति महत्वपूर्ण है। न जाने कितनी परिस्थितियों को पार करना पड़ता है और अब ऐसी विपरीत परिस्थितियों को पार कैसे करें ये वातावरण की संवाहक ऋतुएं हमें सिखाती है,वेद वाक्य कहता है जिवेम् शरदः शतम् अर्थात सौ वर्ष तक जिएं।पर जिएं कैसें, तो इसमें कहा शरद पार करके। क्योंकि इस ऋतु में वातावरण संघर्ष से परिपूर्ण हो जाता है,जो इसको पार कर गया तो मानों उसका स्वागत बसंत करता है। तो बन्धुओं श्रद्धावान मनुष्य के जीवन में संघर्ष ज़रूर आते हैं,पर जो इनको विजय कर गया तो स्वयं परमात्मा उसका पालक व रक्षक बन जाता है और उसका जीवन आनंद से सराबोर हो जाता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि श्रद्धा की हत्या के समान इसी तरह की घटनाओं को रोकने हेतु केंद्र सरकार संपूर्ण देश में शीघ्र 'लव जिहाद विरोधी कानून' बनाए!भारत में लव जिहाद की घटनाएं प्रतिदिन बढ रही हैं।हाल ही में लिव इन में रहनेवाली मुंबई की श्रद्धा नामक युवती की जिहादी आफताब ने क्रूरता से हत्या कर उसके शव के 35 टुकडे किए।आफताब की अन्य भी हिन्दू प्रेमिकाए है,यह भी सामने आया है।इससे पहले भी हरियाणा और पश्चिम बंगाल में प्यार का प्रस्ताव ठुकराने पर हिन्दू लड़कियों पर आक्रमण करनेवाली घटनाएं सामने आयी हैं।लव जिहाद में कहीं हिन्दू युवतियों का धर्मांतरण किया जाता है,कहीं उन पर अत्याचार किए जाते है,तो कहीं हिन्दू युवतियों की हत्या भी की जा चुकी है।लव जिहाद आज हिन्दू समाज के लिए बडी समस्या बन चुका है तथा इसके विरोध में अब संगठित होना समय की आवश्यकता है। केंद्रीय आर्य युवक परिषद उत्तर प्रदेश के प्रांतीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि संस्कार वान बेटियाँ ही राष्ट्र का सुरक्षित भविष्य है अतः अपनी बेटियों को संस्कार वान बनायें। भजनोपदेशक नरेन्द्र आर्य सुमन, राज कुमार भण्डारी,कमला हंस, जनक अरोड़ा,रजनी चुघ,रचना वर्मा,सुषमा बजाज,सरला बजाज, विजय लक्ष्मी, राजश्री आदि ने गीत सुनाकर भावविभोर कर दिया।

आर्य समाज राजौरी गार्डन का उत्सव सम्पन्न व डालेश त्यागी का जन्मोत्सव मनाया

प्रथम चित्र में रविवार 27 नवम्बर 2022, आर्य समाज राजौरी गार्डन दिल्ली के वार्षिकोत्सव में सम्बोधित करते राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य,साथ ही पलवल आर्य समाज जवाहर नगर के प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य का अभिनंदन करते अनिल आर्य। पूर्व महापौर सुभाष आर्य,आचार्य श्यामदेव,आचार्य राजू वैज्ञानिक,संगीतकार जगत वर्मा,शशि प्रभा आर्या आदि के उद्बोधन हुए,प्रधान ओमप्रकाश अरोड़ा,मंत्री अनिल कंवर ने कुशल संचालन किया। द्वितीय चित्र में रविवार 27 नवम्बर 2022,आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी दिल्ली के महामंत्री श्री डालेश त्यागी के जन्मोत्सव पर शॉल वा स्वामी दयानंद जी के चित्र से अभिनंदन करते अनिल आर्य,साथ में ज्योति ओबरॉय,आचार्य चंद्र शेखर शास्त्री आदि।माता पुष्प लता वर्मा,अजय चौधरी, ओमप्रकाश अरोड़ा, रेणु त्यागी,रचना आर्या,नीलम आर्या आदि उपस्थित थे।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970